॥ ३ ॥ भयोक्तम्याः धर्मावाच्याः ॥ ४ ॥ ५ ॥ ५ ॥ ५ ॥ ९ ॥ १ ० ॥ १ १ ॥ १ १ ॥ १ १ ॥ १ १ ॥ १ १ ॥ १ १ ॥ १ १ ॥ १ १ ॥ १ १ ॥ १ १ ॥ १ १ ॥ १ १ ॥ १ १ ॥ १ १ ॥ १ १ ॥ १ १ ॥ १ १ ॥ १ १ ॥ १ १ ॥ १ १ ॥ १ १ ॥ १ १ ॥ १ १ ॥ १ १ ॥ १ १ ॥ १ १ ॥ १ १ ॥ १ १ ॥ १ १ ॥ १ १ ॥ १ १ ॥ १ १ ॥ १ ॥ १ १ ॥ १ १ ॥ १ १ ॥ १ १ ॥ १ १ ॥ १ १ ॥ १ १ ॥ १ १ ॥ १ १ ॥ १ १ ॥ १ ॥ १ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ समानशीलांवीर्येणवसिष्ठस्यमहात्मनः ॥ त्वत्तोधर्मरहस्यानिश्रोतुमिच्छामहेवयं॥ यत्तेगुत्यतमंभद्रेतस्रभाषितुमईसि॥ २॥ अरुंधत्युवाच तपोव द्धिर्मयाप्राप्ताभवतांस्मरणेनवै॥ भवतांचप्रसादेनधर्मान्वक्ष्यामिशाश्वतान्॥ ३॥सगुत्यान्सरहस्यांश्वतान्श्रणुध्वमशेषतः॥ श्रद्धानेप्रयोक्तव्यायस्य शुद्धंतथामनः॥ ४॥ अश्रद्धानोमानीचब्रह्महागुरुतल्पगः॥असंभाष्याहिचत्वारोनैषांधर्मप्रकाश्येत् ॥ ५॥ अहन्यहनियोद्धात्कपिलांद्वादशीःसमाः॥ मासिमासिचसत्रेणयोयजेतसदानरः॥६॥गवांशतसहसंचयोद्याज्येष्ठपुष्करे॥नतद्धर्भफलंतुल्यमतिथिर्यस्यतुष्यति॥७॥श्रूयतांचापरोधमोमनुष्या णांसुखावहः॥श्रद्धानेनकर्तव्यःसरहस्योमहाफलः॥ ८॥ कल्यमुखायगोमध्येगृत्यदर्भान्सहोदकान् ॥निषिचेतगवांश्रंगेमस्तकेनचतज्ञलं॥९॥प्रती च्छेतिनराहारस्तस्यधर्मफलंश्यणु॥श्रूयंतेयानितीर्थानित्रिषुलोकेषुकानिचित्॥ १०॥ सिद्धचारणजुष्टानिसेवितानिमहर्षिभिः॥ अभिषेकःसमस्तेषांगवां श्रंगोदकस्यच॥ ११॥ साधुसाध्वितिचोद्दिष्टंदैवतैःपित्वभिस्तथा॥ भूतैश्वैवसुसंदृष्टैःपूजितासाप्यरुंधती॥ १२॥ पितामहउवाच अहोधमोमहाभा गेसरहस्यउदात्हतः॥वरंददामितेधन्येतपस्तेवर्धतांसदा॥१३॥ यमेउवाच रमणीयाकथादिव्यायुष्मत्तोयामयाश्रुता॥श्रूयतांचित्रगुपस्यभाषितंमम चित्रयं॥ १४॥ रहस्यंधर्मसंयुक्तंशक्यंश्रोतुंमहर्षिभिः॥ श्रद्धानेनमत्येनआत्मनोहितमिच्छता ॥ १५॥ नहिपुण्यंतथापापंकतंकिचिद्दिनस्यति॥ पर्वकाले चयत्किंचिदादित्यंचाधितिष्ठति॥ १६॥ प्रेतलोकंगतेमत्यैतत्तत्सर्वविभावसुः॥ प्रतिजानातिपुण्यात्मातच्चतत्रोपयुज्यते॥ १७॥ किंचिद्धर्मप्रवक्ष्यामिचित्र गुममतंशुभं॥पानीयंचैवदीपंचदातव्यंसततंतथा॥ १८॥ उपानहौचन्छत्रंचकपिलाचयथातथं॥पुष्करेकपिलादेयाबाह्मणेवेदपारगे॥ १९॥ अग्निहोत्रं चयनेनसर्वशःप्रतिपालयेत् ॥ अयंचैवापरोधर्मश्चित्रगुप्तेनभाषितः ॥ २०॥ फलमस्यपृथक्केनश्रोतुमईतिसत्तमाः ॥ प्रलयंसर्वभूतैस्तुगंतव्यंकालपर्यया त्॥२१॥तत्रदुर्गमनुप्राप्ताःक्षुत्तृष्णापरिपीडिताः॥दत्यमानाविपच्यंतेनतत्रास्तिपलायनं॥२२॥ अंधकारंतमोघोरंप्रविशंत्यल्पबुद्धयः॥ तत्रधर्मप्रव क्यामियेनदुर्गाणिसंतरेत्॥२३॥अल्पव्ययंमहार्थंचप्रेत्यचैवसुखोदयं॥पानीयस्यगुणादिव्याःप्रेतलोकेविशेषतः॥ २४॥तत्रपुण्योदकानामनदीतेषांवि धीयते॥ अक्षयंसलिलंतत्रशीतलंत्यक्तोपमं॥ २५॥ ॥ २० ॥ प्रकष्टोलयः अदर्शनंयस्मात्तवलयंमरणं ॥२१॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥